कक्षा-10

अध्याय-9 राजस्थानी भाषा और साहित्य

☛ **वि.सं. 835/913 ई. में उद्योतन सूरी द्वारा लिखित कुवलयमाला ग्रंथ में कितनी देशी भाषाओं का वर्णन मिलता है?**

(1) 12 (2) 15
(3) 18 (4) 04 (3)

व्याख्या–913 ई. यानि 835 वि.स. में लिखी कुवलयमाला में वर्णित 18 देशी भाषाओं में मरूभाषा भी शामिल है जो पश्चिमी राजस्थान की भाषा है।

- कुवलयमाला की रचना उद्योतन सूरि ने जालौर दुर्ग में वत्सराज के समय की।
- **ध्यान रहे**–*कक्षा 10 की पुस्तक में कुवलयमाला की रचना 913 ई. में बताते है जबकि अन्य पुस्तकें इसकी रचना का समय 778 ई. बताती है।*

☛ **राजस्थान की भाषा के लिए 'राजस्थानी' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया?**

(1) कर्नल जेम्स टॉड (2) जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन
(3) जार्ज थामस (4) सूर्यमल्ल मिश्रण (2)

व्याख्या–1912 ई. में पुस्तक लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया में किया।

☛ **डॉ. ग्रियर्सन ने राजधानी बोलियों को मुख्य रूप से कितने भागों में बाँटा–**

(1) 02 (2) 05
(3) 09 (4) 07 (2)

व्याख्या–पश्चिमी राजस्थान-मारवाड़ी, मेवाड़ी, बग्गडी, शेखावाटी। पूर्वी राजस्थानी – ढूँढाड़ी, हाड़ौती, मेवाती, अहिरवाटी। ग्रियर्सन ने 5 मुख्य वर्गों में बांटा लेकिन सहूलियत के लिये राजस्थानी बोलियों को दो भागों में विभाजित करते है।

☛ **थली व गोडवाडी की बोलियाँ किसकी उपबोलियाँ है?**

(1) ढूँढाड़ी (2) हाड़ौती
(3) मारवाड़ी (4) मेवाती (3)

व्याख्या–जोधपुर, बीकानेर, नागौर, बाड़मेर, जैसलमेर, पाली, शेखावाटी क्षेत्र में बोली जाती है।

☛ **मेवाड़ी बोली कहाँ बोली जाती है?**

(1) उदयपुर, चित्तौड़गढ़ (2) राजसमंद
(3) भीलवाड़ा (4) उपर्युक्त सभी (4)

व्याख्या–राजस्थान के मेवाड़ राज्य का क्षेत्र मेवाड़ी क्षेत्र कहलाता है। साहित्य परम्परा की दृष्टि से मारवाड़ी के पश्चात् मेवाड़ क्षेत्र में साहित्य लेखन हुआ।

- आधुनिक राजस्थान में उदयपुर, चित्तौड़गढ़, राजसमंद तथा भीलवाड़ा का क्षेत्र मेवाड़ी बोली का क्षेत्र कहा जा सकता है।
- मेवाड़ी बोली के भी दो रूप देखने को मिलते है–
  - ➡ पर्वतीय मेवाड़ी – पर्वतीय क्षेत्र में बोले जाने वाली
  - ➡ मैदानी मेवाड़ी – मैदानी क्षेत्रों में बोले जाने वाली

☛ **तोरावाटी, राजावटी, नागरचोल किस बोली की उपबोलियाँ है?**

(1) मेवाड़ी (2) ढूँढाड़ी
(3) हाड़ौती (4) मालवी (2)

व्याख्या–जयपुर-दौसा में ढूंढ़ नदीके आसपास का क्षेत्र ढूंढाड़ कहलाता है।

- प्राचीन ढूंढाड़ प्रदेश का सम्बंध आमेर से रहा है। जो कच्छवाह शासकों की राजधानी भी रहा है।
- ढूढांड़ी बोली की सबसे बड़ी विशेषता ''छै'' शब्द का प्रयोग है।
- ''छै'' शब्द के प्रयोग के कारण इस पर गुजराती प्रभाव झलकता है।

☛ **मेवाती कहाँ बोली जाती है?**

(1) अलवर, भरतपुर (2) कोटा, बूँदी
(3) बाड़मेर, जैसलमेर (4) गंगानगर, हनुमानगढ़ (1)

व्याख्या–'मेव' जाति के बाहुल्य के कारण अलवर भरतपुर वाला क्षेत्र 'मेवात' कहलाता है।

- यह क्षेत्र पड़ौसी राज्य हरियाणा की सीमा को छूता है।
- यहाँ की बोली पर ब्रज भाषा का प्रभाव देखने को मिलता है।
- **ध्यान रहे**–*भारत की स्वतंत्रता के समय यहाँ के मेव मुस्लिमों ने अलग राष्ट्र 'मेवस्तान' की मांग रखी थी जिसे वल्लभ भाई पटेल की सूझबूझ से दबाया गया।*

☛ **हाड़ौती बोली किन क्षेत्रों में बोली जाती है?**

(1) कोटा, बूँदी (2) बाराँ

(3) झालावाड़ (4) उपरोक्त सभी (4)

व्याख्या–आधुनिक राजस्थान में कोटा संभाग (बारां, बूंदी, झालावाड़, कोटा) वाला क्षेत्र हाड़ौती कहलाता है। यहाँ हाड़ा राजपूतों के शासन के कारण इसका नाम हाड़ौती पड़ा। यहाँ की बोली में भी ढूंढ़ाड़ी बोली की तरह ''छै'' शब्द का प्रयोग देखने को मिलता है।

☛ **वागड़ी बोली कहाँ बोली जाती है?**

(1) डूँगरपुर, बाँसवाड़ा (2) अलवर, भरतपुर

(3) गंगानगर, हनुमानगढ़ (4) जयपुर, जोधपुर (1)

व्याख्या–डूंगरपुर-बांसवाड़ा का क्षेत्र वागड़ कहलाता है। यह बोली यहां के पहाड़ी क्षेत्रों में बोली जाती है। इस बोली पर गुजराती भाषा का प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई देता है।

- **ध्यान रहे**–*डूंगरपुर को ''पहाड़ों की रानी'' व बांसवाड़ा को 'सौ द्वीपों का शहर' कहा जाता है।*

☛ **रांगड़ी और निंमाडी किस बोली की उपबोलियाँ है?**

(1) वागड़ी (2) मालवी

(3) मेवाती (4) शेखावाटी (2)

व्याख्या–प्रतापगढ़ में मालवी बोली जाती है। मालवा के आसपास के क्षेत्र में मालवी बोली का प्रभाव देखने को मिलता है मुख्य तौर पर मध्यप्रदेश का रतलाम व झाबुआ आदि क्षेत्र इस बोली का क्षेत्र रहा है।

- **ध्यान रहे**–*हाड़ौती का पठार, मालव के पठार का ही हिस्सा है।*

☛ **शेखावाटी क्षेत्र के अंदर कौनसे जिले आते हैं?**

(1) चूरू, झुँझुनूँ (2) हनुमानगढ़, सूरतगढ़

(3) गंगानगर (4) उपर्युक्त सभी (4)

व्याख्या–शेखावाटी की स्थापना का श्रेय राव शेखा को जाता है। मुख्य तौर पर वर्तमान में इसमें चूरू, सीकर व झुंझनूं आते है लेकिन शेखावाटी बोली का प्रभाव इनके आस-पास भी देखने को मिलता है।

☛ **मारवाड़ी व मालवी की सम्मिश्रण से उत्पन्न होती है?**

(1) मेवाती (2) अहीरवाटी

(3) रांगड़ी (4) नागरचोल (3)

☛ **निम्नलिखित में से असत्य कथन छाँटिए–**

(1) दक्षिणी पूर्वी राजस्थान – मालवी

(2) गोड़वाड़ी – सिरोही, पाली

(3) खैराडी – शाहपुरा, बूँदी

(4) अगरौती – प्रतापगढ़ (4)

व्याख्या–अगरौती–'करौली'

- राजस्थान में आदिवासी जनजातियों का भी भाषा पर प्रभाव देखने का मिलता है।
- इनमें 'पहाड़ी बोली' व कबीला संस्कृति के कई रूप देखने को मिलते है। इनमें भीली बोली प्रमुख है।
- ग्रियर्सन ने बागड़ी को भीली बोली के नाम से संबोधित किया।

☛ **रणमल छंद ग्रंथ के लेखक है?**

(1) श्रीधर व्यास (2) सूर्यमल्ल मिश्रण

(3) विजयदान देथा (4) बाकीदास (1)

☛ **निम्न में से असत्य कथन पहचानिए?**

लेखक	पुस्तक
(1) पृथ्वीराज राठौड़	वेलिकिसन रूक्मणी री
(2) माधोदास दधवाडिया	रामरासौ
(3) ईसरदास	हरिरस व देवियाण
(4) रणमल	सांया जी झूला (4)

व्याख्या–सांया जी झूला–नागदमण।

☛ **देसी राज्यों के राज्यों ने अपने सम्मान, सफलता और विशेष कार्य के विवरण के रूप में अपना इतिहास लिखवाकर संचित किया, यह इतिहास कहलाता है?**

(1) दवावैत (2) ख्यात

(3) वात (4) झमाल (2)

व्याख्या–मुहणौत नैनसी री ख्यात–मुहणौत नैणसी, बीकानेर–राठौड़ री ख्यात–दयालदास।

- दयाल दास री ख्यात में बीकानेर के राव बीकाजी से लेकर महाराजा अनुपसिंह तक का इतिहास देखने को मिलता है।
- दयालदास बीकानेर शासक रतनसिंह का व मुहणौत नैणसी जोधपुर शासक जसवंतसिंह-I का दरबारी कवि था।

☛ **विजयदान देथा की बातां री फुलवारी कितने खंडों में प्रकाशित है?**

(1) 14 (2) 09

(3) 12 (4) 18 (1)

व्याख्या–विजयदान देथा को ''राजस्थान का शेक्सपीयर'' कहा जाता है। इनकी अन्य रचनाओं में पुटियो काकौ, दुविध्या, आदमखोर, अलेखु हिटलर, बापू के तीन हत्यारे आदि प्रमुख है।

- इन्हें 2007 में पद्मश्री व 2012 में राजस्थान रत्न पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- **ध्यान रहे** - भारत का शेक्सपीयर 'कालीदास' को कहा जाता है।

☛ **जिस काव्य ग्रन्थ में किसी राजा की कीर्ति, विजय, युद्ध, वीरता आदि का वर्णन हो उसे कहते हैं?**

(1) वेली (2) साखी
(3) रासौ (4) रूपक (3)

व्याख्या–
- पृथ्वीराज रासौ – चन्द्रबरदाई
- रतन रासौ – कुम्भकर्ण
- सुगत रासौ – गिरिधर असिया
- खुमाण रासौ – दलपत विजय
- हम्मीर रासौ – जौधराज
- नरपति नाल्ह – बिसलदेव रासौ

☛ **पुस्तक लेखक के असत्य कथन को पहचानिए–**

(1) मारवाड़ रा परगना री विगत–मुहनोत नैणसी
(2) वेलि किसन रूकमणी री–पृथ्वीराज राठौड़
(3) अचलदास खिंची री वचनिका–शिवदास गाडण
(4) राठौड़ रतन सिंह, महेश दासोत–कुम्भकर्ण री वचनिका(4)

व्याख्या–राठौड़ रतनसिंह व महेश दासोत री वचनिका के लेखक ''जग्गा खिडियाँ'' है।

☛ **निम्नलिखित में से कौनसा सुमेलित नहीं है–**

(1) पगफेरो – मणिमधुकर
(2) किशोरदास – राजप्रकाश
(3) कमलदास – सूरजप्रकाश
(4) आसिया मानसिंह – महायश प्रकाश (3)

☛ **धरती धोरां री, मीझंर, लीलटांस किसकी रचना है?**

(1) मेघराज मुकुल (2) कन्हैयालाल सेठिया
(3) नथमल जोशी (4) शिवचंद्र भरतिया (2)

व्याख्या–कन्हैयालाल सेठिया मूल रूप से सुजानगढ़ चूरू से संबंधित रहे है।
- इन्हें राजस्थान के भीष्म पितामह के नाम से जाना गया है।
- इन्हें रचना ''शबद'' के लिये सूर्यमल्ल मिश्रण पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

☛ **प्रसिद्ध कविता सेनाणी के लेखक कौन है?**

(1) मेघराज मुकुल (2) नथमल जोशी
(3) विजयदान देथा (4) लक्ष्मी कुमारी चुंडावत (1)

☛ **राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित पत्रिका कौनसी है?**

(1) ओल्यू (2) मधुमति
(3) मूमल (4) जागती जोत (2)

व्याख्या–अन्य साहित्यिक पत्रिकाएँ-
- वातायन (बीकानेर) – हरीश भादानी
- लहर (अजमेर) – प्रकाश जैन
- ओर (भरतपुर)– विजेन्द्र
- सम्बोधन (कांकरोली) – कमर मेवाड़ी
- कविता (अलवर) – भागीरथ भार्गव
- सम्प्रेषण – चन्द्रभानु भारद्वाज
- मधुमाधवी – नलिनी उपाध्याय
- इनके अलावा राजस्थानी भाषा साहित्य व संस्कृति अकादमी बीकानेर की 'जागती जोत', सत्यप्रकाश जोशी की हरावल, किशोर कल्पनाकांत की 'ओल्यू', कवि चन्द्रसिंह की मरूवाणी भी प्रमुख राजस्थान पत्रिकाएं रही है।

☛ **जनसाधारण की भावनाओं को आमजन तक पहुँचाने के लिए पढ़े लिखे लोगों द्वारा लिखे गये लेख कहलाते हैं?**

(1) सिलोका (2) वैली
(3) साखी (4) रूपक (1)

व्याख्या–सिलोका लेखो में ''राव अमरसिंह रा सिलोका'', ''आजमालजी रो सिलोको'', ''राठौड़ कुसलसिंह रो सिलोको'', ''भाटी केहरसिंह रो सिलोको'' आदि प्रमुख है।

☛ **राजस्थान का प्रथम आधुनिक गद्यकार कहा जाता है?**

(1) नथमल जोशी (2) शिवचंद्र भरतिया
(3) कन्हैयालाल (4) विजयदान देथा (2)

व्याख्या–शिवचन्द भरतिया के उपन्यास कनक सुन्दर को राजस्थानी भाषा का प्रथम उपन्यास माना जाता है।

☛ **मांझल रात, अमोलक वातां, मूमल, गिर ऊँचा ऊँचा गढ़ा, के रे चकवा बात किसकी रचनाएँ है?**

(1) कन्हैयालाल सेठिया (2) यादवेन्द्र शर्मा
(3) लक्ष्मीकुमारी चुंडावत (4) विजयदान देथा (3)

व्याख्या–लक्ष्मीकुमारी चुडांवत की अन्य रचनाएं – डूंगजी–जवाहरजी री बात, टाबरा री वात, बाघो भारमली आदि। इन्हें राजस्थान रत्न भी प्राप्त है। इन्होंने रूसी कथाओं का राजस्थानी अनुवाद गजबण नाम से किया।

☛ **बातां री फुलवारी, दुविधा, उलझन, अलेखू हिटलर, सपन प्रिया अंतराल किसकी रचना है?**

(1) विजयदान देथा (2) यादवेन्द्र शर्मा
(3) कन्हैयालाल सेठिया (4) लक्ष्मी कुमारी चुंडावत (1)

परीक्षा दृष्टि

★ 'खैराड़ी' बोली किस क्षेत्र में प्रचलित है – टोंक-भीलवाड़ा
★ तोरावाटी है – ढूँढाड़ी बोली
★ मारवाड़ी भाषा का विशुद्ध रूप कहाँ दृष्टिगत होता है– –जोधपुर और उसके सीमावर्ती क्षेत्रों में
★ राजस्थान की मानक बोली के रूप में प्रसिद्ध है – मारवाड़ी
★ ढूँढाड़ी बोली कहाँ बोली जाती है – जयपुर, दौसा, टोंक
★ 'राजस्थान की मरूभाषा' कहलाती है – मारवाड़ी
★ कौनसी बोली पश्चिम हिन्दी एवं राजस्थानी के बीच के समन्वय का कार्य करती है – मेवाड़ी
★ मेवाती बोली किस जिले में बोली जाती है – अलवर
★ राजस्थानी भाषा का उत्पत्ति काल है – 12वीं शताब्दी का अंतिम चरण
★ वागड़ी बोली प्रचलित है – बाँसवाड़ा, डूँगरपुर में
★ ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं भाषा वैज्ञानिकों के आधार पर राजस्थानी की उत्पत्ति मानी जाती है – गुर्जर अपभ्रंश से
★ राजस्थान में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है – मारवाड़ी
★ 1961 में कुल कितनी राजस्थानी की बोलियाँ थीं – 73 बोलियाँ
★ मारवाड़ी के बाद राज्य की महत्त्वपूर्ण बोली है – मेवाड़ी
★ संत दादू ने अपनी साहित्यिक रचनाएँ किस भाषा में लिखी – ढूँढाड़ी
★ चरणदास एवं लालदासजी के साहित्यों की भाषा है –मेवाती
★ राजस्थान की मूल भाषा कौनसी है – राजस्थानी
★ उदयपुर, भीलवाड़ा व चित्तौड़गढ़ में अधिकांशत: बोली जाती है – मेवाड़ी
★ स्वामी दयानंद सरस्वती के सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' का प्रकाशन कहाँ हुआ? – उदयपुर
प्रथम संस्करण का प्रकाशन अजमेर में हुआ था।
★ 'बीसलदेव रासो' नामक ग्रंथ के रचयिता है–नरपति नाल्ह
★ 'लीलटांस' के लेखक हैं – कन्हैयालाल सेठिया
★ संगीतग्रंथ, संगीतसार, संगीतराज और संगीत उल्लास में से किस एक की रचना महारणा कुम्भा द्वारा की गई – संगीतराज
★ 'चेतावनी रा चुंगट्या' नामक कविता किसके लिए लिखी गई थी – मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह के लिए

☛ **चांदा सेठानी, जोग-संजोग, हूं गोरी किण पीव री, जमारो समन्द अर थार किसकी रचनाएँ है?**
(1) विजयदान देथा (2) यादवेन्द्र शर्मा
(3) कन्हैयालाल सेठिया (4) लक्ष्मीकुमारी चुंडावत (2)

☛ **परण्योडी-कुंवारी, आबैपटकी, धौरां री धौरी एक बिनाणी दो बीन किसकी रचना है–**
(1) नथमल जोशी (2) यादवेन्द्र शर्मा
(3) लक्ष्मीकुमारी चुंडावत (4) विजयदान देथा (1)

☛ **निम्नलिखित में से कौनसा सुमेलित है–**
(1) नेह तरंग – राव बुधसिंह
(2) राजिया रा सोरठा – कृपारामजी खिडिया
(3) ओल्यू – किशोर कल्पनाकांत
(4) उपर्युक्त सभी (4)

☛ **बादली, लू, आदि ग्रन्थों की रचना किसने की?**
(1) चन्द्रसिंह (2) रांगेय राघव
(3) विजयदान देथा (4) कन्हैयालाल सेठिया (1)

☛ **विजयदान देथा की किस रचना पर ''पहेली'' नामक फिल्म का निर्माण हो चुका है?**
(1) उलझन (2) अलेखू हिटलर
(3) दुविधा (4) सपन प्रिया (3)

☛ **राजस्थान भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर द्वारा प्रकाशित पत्रिका है–**
(1) जागती जोत (2) मधुमति
(3) मूमल (4) ओल्यू (1)

☛ **प्रताप रा झूलना किसकी रचना है?**
(1) माला सांदु (2) चक्रपाणि मिश्र
(3) दुरसा आढा (4) इनमें से कोई नहीं (1)

व्याख्या–माला सांदू ने झूलणा विद्या में साहित्य रचना में अहम भूमिका निभाई। ये महाराणा प्रताप के समकालीन थे। इनकी अन्य रचनाओं में झूलणा अकबर पातशाह जी रा, झूलणा महाराज रायसिंह जी रा, झूलणा राव अमरसिंह जी रा व झूलणा दीवान श्री प्रताप सिंह जी रा प्रमुख है।

☛ **''आयो अंग्रेज मूलक रे उपर'' निम्न में से यह किसकी रचना है?**
(1) बांकीदास (2) दयालदास
(3) मुहनौत नैणसी (4) ईश्वरदास (1)

व्याख्या–बांकीदास जोधपुर महाराज मानसिंह के दरबारी कवि व गुरू थे। इनकी अन्य रचनाओं में दातार बावनी, कुकवि बत्तीसी, मानजसोमण्ड़न, सूर छत्तीसी आदि प्रमुख है।

☛ **''राणे जगपत रा मरस्या'' किस शासक की मृत्यु पर लिखा?**
(1) महाराणा प्रताप (2) महाराणा जगतसिंह
(3) महाराणा सज्जन सिंह (4) महाराणा अमरसिंह (2)

व्याख्या–''राणे जगपत रा मरस्या'' मेवाड़ महाराणा जगत सिंह की मृत्यु पर शोक प्रकट करने के लिए लिखा गया था।

- राजा या किसी व्यक्ति विशेष की मृत्यु के बाद शोक व्यक्त करने हेतु 'मरस्यां' काव्यों की रचना की जाती है।

☛ **अभिलेखीय साहित्य में शामिल होते है-**

(1) शिलालेख (2) अभिलेख
(3) सिक्के व मुहर (4) ये सभी (4)

☛ **निम्न में से असुमेलित को छांटिए-**

(1) प्राचीन काल- वीरगाथा काल – 1050 से 1550 ई.
(2) पूर्व मध्यकाल- भक्तिकाल – 1450–1650 ई.
(3) उत्तर मध्य काल- श्रृंगार, रीति एवं नीतिपरक काल – 1650 से 1850 ई.
(4) आधुनिक काल- विविध विषयों एवं विधाओं से युक्त – 1500 से 2000 ई. (4)

व्याख्या–आधुनिक काल विविध विषयों व विधाओं से युक्त रहा जिसका सही कालक्रम 1850 से अद्यतन है।

☛ **निम्न में से सही कूट का चयन करे-**

(a) पूर्व मध्यकाल में भक्ति आधारित साहित्य सृजन का विकास देखने को मिला।
(b) सगुण व निर्गुण दोनों धाराओं का प्रभाव पूर्व मध्य काल में देखने को मिला।
(c) पूर्व मध्यकाल का कालक्रम 1450 से 1650 ई. तक देखने को मिलता है।
(d) प्रमुख निर्गुण संतों में वल्लभाचार्य, निम्बार्काचार्य, मीराबाई आदि का उल्लेख मिलता है।

कूट- (1) a व b सही है। (2) a, b व c सही है।
(3) a, c व d सही है। (4) a, d व b सही है। (2)

व्याख्या–पूर्व मध्यकाल में संत साहित्य का विशेष योगदान रहा है। रामस्नेही सम्प्रदाय, दादूपंथ, नाथपंथ, अलखिया सम्प्रदाय, विश्नोई सम्प्रदाय, जसनाथी सम्प्रदाय आदि का प्रभाव देखने को मिला।

- इन्होंने नाम स्मरण का महत्व, निर्गुण उपासना पर बल, गुरू की महत्ता पर बल व जाति व्यवस्था में भेदभाव मिटाने पर बल दिया।

➡ **सगुण विचारधारा के संत** – रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य, गौरांग महाप्रभु, मीराबाई, रामानंद जी, संत मावजी, रानाबाई आदि।

➡ **निर्गुण विचारधारा के संत** – दादू दयाल, जांभोजी, जसनाथजी, सुंदरदास जी, रज्जब जी, रामस्नेही संत, लालगिरी जी, संत पीपा आदि।

☛ **राजस्थानी साहित्य के वीरगाथा काल की प्रमुख विशेषता है-**

(1) इस काल में पश्चिमी देशों से अधिक हमले होने के कारण वीरों का वर्णन अधिक हुआ।
(2) इस काल की प्रमुख रचना श्रीधर व्यास की रणमल छंद रही है।
(3) इस काल में जैन रचनाकारों की रचनाएँ भी उल्लेखनीय रही है।
(4) उपरोक्त सभी सही है। (4)

☛ **कवि मंछाराम की रघुनाथपरक रचना व संबोधन परक रचनाओं में राजिया रा सोरठा, चकरिया रा सोरठा, भेरिया रा सोरठा, मोतिया रा सोरठा आदि किस काल की देन है-**

(1) प्राचीन काल (2) पूर्व मध्यकाल
(3) उत्तर मध्य काल (4) आधुनिक काल (3)

☛ **राजस्थान साहित्य में चेतना का शंखनाद करने वाले कवि माने जाते है-**

(1) बांकीदास (2) सूर्यमल्ल मिश्रण
(3) दोनों (4) इनमें से कोई नहीं (3)

व्याख्या–सूर्यमल्ल मिश्रण का जन्म बूंदी के हरणा गांव में हुआ। इनके पिता चण्डीदान बूंदी महाराव रामसिंह क दरबारी थे। इन्होंने वंश भास्कर, वीर सतसई, राम रंजाट, बलवंत विलास, धातु रूपावली, सतीरासो जैसी रचनाएं की। इनकी रचना वंश भास्कर को इनके दत्तक पुत्र मुरारीदान ने पुरा किया।

- बांकिदास मारवाड़ शासक मानसिंह के दरबारी कवि थे।
- राष्ट्रीय चेतना संबंधी रचनाओं में हिंगलाजदान कविया व शंकरदान सामोर का भी योगदान है।

☛ **राजस्थानी साहित्य की वह काव्य विद्या/गद्य पद्य रचना जिसमें अंत्यानुप्रास मिलता है-**

(1) वचनिका (2) दवावैत
(3) वात (4) झमाल (1)

व्याख्या–वचनिका शब्द का उद्भव संस्कृत के 'वचन' शब्द से हुआ है। राजस्थानी साहित्य में शिवदास गाडण रचित 'अचलदास खींची री वचनिका' तथा जग्गा खिड़िया रचित 'राठौड रतनसिंघ महेसदासोत री वचनिका' बहुत प्रसिद्ध है।

☛ **वह काव्य विधा जो वचनिका के समान ही गुण लिए है, लेकिन जिसमें उर्दू व फारसी शब्दों का प्रयोग होता है-**

(1) दवावैत (2) झूलणा
(3) प्रकास (4) कोई नहीं (1)

व्याख्या–दवावैत में कथा के नायक का गुणगान, राज्य वैभव, युद्ध, आखेट, नखशिस वर्णन आदि तुकान्त व प्रवाह युक्त होता है।

- **प्रमुख दवावैत**–महाराणा जवानसिंह री दवावैत, अखमाल देवड़ा री दवावैत, राजा जयसिंह री दवावैत आदि।

परीक्षा दृष्टि

★ 'राव जैतसी रो छंद' ग्रंथ के रचनाकार है – सुजाजी
★ वीर सतसई के लेखक हैं – सूर्यमल्ल मिश्रण
★ 'डिंगल का हैरोस' किसे कहा जाता है – पृथ्वीराज राठौड़
★ 'वेलिक्रिसण रूक्मणि री' किस भाषा का ग्रंथ है – उत्तरी मारवाड़ी
(इस ग्रंथ के लेखक- पृथ्वीराज राठौड़ थे)
★ राजस्थानी भाषा मारवाड़ी का साहित्यिक रूप है – डिंगल
★ प्रसिद्ध राग उपन्यास राग दरबारी के लेखक कौन है– –श्रीलाल शुक्ल
★ 'पपद्मावत' के रचनाकार हैं – मलिक मोहम्मद जायसी
★ 'पृथ्वीराज विजय' के लेखक हैं – जयानक
★ बादली के रचनाकार हैं – चन्द्रसिंह
★ कान्हड़दे प्रबंध का रचयिता कौन है – पद्मनाभ कवि
★ 17वीं शताब्दी की रचना 'राज प्रशस्ति महाकाव्य' के रचयिता थे – रणछोड़ भट्ट
★ सवाई जयसिंह के राजकवि जिसने 'राम रासा' की रचना की थी, थे – श्रीकृष्ण भट्टकवि कलानिधि
★ 'राग मंजरी' एवं 'राग माला' जैसे प्रसिद्ध ग्रंथों के रचयिता कौन थे – पुण्डरिक विट्ठल
★ शिशुपाल वध का लेखक था – भीनमाल का माघ
★ 'मैं देखता चला गया' किससे संबंधित है – गुलाब कोठारी
★ 'पीथल' द्वारा डिंगल भाषा में लिखे गये ग्रंथ है – वेलिकृष्ण रूक्मणी री
★ गीता प्रेस गोरखपुर की स्थापना 1923 में (राजस्थान में जन्में) किस व्यक्ति ने की – हनुमान प्रसाद पोद्दार
★ 'भारतीय प्राचीन लिपि माला' के लेखक का नाम है– –गौरीशंकर हीराचंद ओझा
★ कन्हैयालाल सेठिया की कृति है – धरती धोरां री
★ वेलि कृष्ण रूक्मणि री के लेखक थे – पृथ्वीराज राठौड़
★ प्रसिद्ध राजस्थानी कविता 'पाथल और पीथल' के रचयिता थे – कन्हैयालाल सेठिया
★ 'वंश भास्कर' का रचयिता है – सूर्यमल मिश्रण
★ राजस्थान की राजकीय विभागों में केवल भाषा और देवनागरी की रबर की मोहरों का उपयोग कब अनिवार्य किया गया – सन् 1976 में
★ रामा सांदू व माला सांदू महाराणा प्रताप के समकालीन कवि थे।
★ झोटिंग भट्ट व धनेश्वर भट्ट राणा लाखा के दरबारी थे।

☛ 'वात' साहित्य विधा से संबंधित असत्य कथन है-
(1) इसमें कहानी को 'वात' के रूप में कहा-सुना जाता है। जो गद्य व पद्य दोनों रूप में हो सकती है।
(2) इसके बीच-बीच में हाँ, हाँ सा, हुकम, जी जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है, जिसे हुकांरा भरना कहते है।
(3) राजस्थानी साहित्य में 'राव अमरसिंह जी री वात' खीचिंया री वात''पाबूजी री वात', 'कान्हड़ दे री वात', 'अचलदास खीचीं'' आदि प्रमुख वाते है।
(4) सभी कथन सत्य है। (4)

☛ यह किस राजस्थानी काव्य विद्या की विशेषता है- ''पहले पूरा दोहा, फिर पांचवे चरण में दोहे के अंतिम चरण की दोहराया जाता है।''
(1) परची (2) प्रकास
(3) झमाल (4) मरस्या (3)

व्याख्या–यह राजस्थानी काव्य का मात्रिक छंद है। राजस्थान में 'राव इन्द्रसिंह जी री झमाल' प्रसिद्ध है।

☛ यह किस काव्य विधा की विशेषता है – ''इसमें चौबीस अक्षर के वर्णिक छंद के अंत में यगण होता है।''
(1) परची (2) रूपक
(3) सिलोका (4) झूलणा (4)

☛ राजस्थानी भाषा में संत महात्माओं का पदबद्ध जीवन परिचय कहलाता है–
(1) रासो (2) परची
(3) प्रकास (4) मरस्या (2)

व्याख्या–राजस्थान के कुछ प्रमुख परची साहित्य – संत नामदेव री परची, कबीर री परची, संत रैदास री परची, संत पीपा री परची, संत दादू री परची, मीराबाई री परची आदि।

☛ किसी वंश अथवा व्यक्ति विशेष की उपलब्धियों या घटना विशेष पर प्रकाश डालने वाली कृतियों को कहा जाता है–
(1) प्रकास (2) वेलि
(3) झमाल (4) साखी (1)

व्याख्या–कुछ प्रसिद्ध प्रकास सहित्य
- राजप्रकास – किशोरदास
- महाशय प्रकास – आशिया मानसिंह
- सूरज प्रकास – करणीदान

☛ किसके अनुसार ''जिस काव्य ग्रंथ में किसी राजा की कीर्ति, विजय, युद्ध, वीरता आदि का विस्तृत वर्णन हो उसे रासो कहते है।''
(1) जॉर्ज ग्रियर्सन (2) पीएल टेस्सीटोरी
(3) मोतीलाल मेनारिया (4) कर्नल जेम्स टॉड (3)

व्याख्या–मोतीलाल मेनारिया ने मेवाड़ी को मारवाड़ी की ही उपबोली माना।

परीक्षा दृष्टि

★ वीर रस में डिंगल काव्य की रचना का श्रेय किस जाति को है – चारण

★ राजस्थानी साहित्य का वीर गाथा काल है– – विक्रम संवत् 800 से 1460 तक

★ 'ललित विग्रहराज' का लेखक कौन था – सोमदेव

★ राजस्थान की किस देशी रियासत ने स्वतंत्रता से पूर्व हिन्दी भाषा को राजकीय भाषा बनाया – भरतपुर

★ राजस्थान में राष्ट्रीयता की संवृद्धि के सर्वप्रथम प्रेरक थे – सूर्यमल्ल मिश्रण के विचार

★ पोथीखाना जयपुर, पुस्तक प्रकाश जोधपुर एवं सरस्वती भण्डार उदयपुर में समृद्ध साहित्य उपलब्ध है जो न केवल राजस्थान को बल्कि भारत को भी समृद्ध बनाए हुए है, सम्बन्धित है – चित्रकला से साहित्यिक पत्रिका

★ 'हरावल' – सत्यप्रकाश जोशी

★ 'ओल्यू' – किशोर कल्पनाकांत

★ 'मरूवाणी' – कवि चन्द्रसिंह

★ 'पृथ्वीराज रासो' ग्रंथ के लेखक थे – चन्दबरदाई

★ 'अचलदास खींची री वचनिका' से कहाँ का इतिहास मुख्य रूप से ज्ञात होता है – गागरोण

★ डॉ. एल.पी. टेस्सीटोरी संबंधित है – राजस्थानी साहित्य से

★ 'ढोलामारू रा दूहा' के लेखक हैं – कवि कल्लोल

★ जयचन्द सूरी की रचना थी – हम्मीर मदमर्दन

★ 'बीकानेर' के राठौड़ों री ख्यात के लेखक थे – दयालदास

★ 1733 ई. में 'जीज मुहम्मदशाही' पुस्तक के नक्षत्रों संबंधी ज्ञान से संबंधित है, के लेखक हैं – जयपुर के सवाई जयसिंह

★ 'राग कल्पद्रुम' के रचयिता हैं – कृष्णानन्द व्यास

★ हम्मीर महाकाव्य में चौहानों को बताया गया है – सूर्यवंशी

★ शास्त्रीय संगीत पर प्रसिद्ध 'राधा गोविन्द संगीत सार' के रचयिता हैं – देवर्षि भट्ट ब्रजपाल

★ रसिक रत्नावली के लेखक कौन थे – नरसिंहदास

★ राग माला एवं राग मंजरी के रचयिता हैं– – पुण्डरीक विट्ठल

★ मंडन द्वारा रचित वास्तुकला के जिस ग्रंथ में मूर्तिकला की जानकारी मिलती है, वह ग्रंथ है – रूप मण्डन

★ राजस्थानी हिन्दी संक्षिप्त शब्दकोश के सम्पादक हैं – पद्मश्री सीताराम लालस

☛ **किसी वंश अथवा व्यक्ति विशेष की उपलब्धियों के स्वरूप को दर्शाने वाली काव्य कृति कहलाती है–**

(1) रूपक (2) साखी
(3) वेलि (4) इनमें से कोई नहीं (1)

व्याख्या–कुछ प्रसिद्ध रूपक – गजगुण रूपक, रूपक गोगादेव व जी री, राजरूपक आदि। राजरूपक की रचना कवि वीरभाण ने की।

☛ **किसी राजा, उसके परिवार, राज्य के प्रमुख व्यक्ति, उनके राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक परिदृश्य का विस्तृत विवरण "विगत" से प्राप्त होते है। मारवाड़ रा परगना री विगत" किसने लिखी–**

(1) बांकिदास (2) मुहणोत नैणसी
(3) गिरधर आसिया (4) दयालदास (2)

व्याख्या–मारवाड़ रा परगना री विगत को जोधपुर राज्य का गजेटियर कहा जाता है। इससे मारवाड़ की राजस्व, रेख, भूमि किस्म, फसलों का हाल, सिंचाई के साधन, ग्रामीण जीवन संबंधी जानकारी मिलती है।

- मुहणोत नैणसी को मुंशीदेवी प्रसाद ने 'राजपुताने का अबुल-फजल" कहा।
- कानूनगों ने इसे अबुल-फजल से भी अधिक योग्य बताया।

☛ **'वेलियो' छंद में लिखी हुई साहित्यिक विधा है-**

(1) सिलोका (2) रासो
(3) वेलि (4) झूलणा (3)

व्याख्या–इनके विविध धार्मिक व ऐतिहासिक विषय रहे। **प्रमुख वेलि ग्रंथ** - वेलि किसण रूकमणी री, दईदास जैतावत री वेली, रतनसी खीवावत री वेलि, राव रतन री वेलि आदि।

☛ **साखी किस शब्द से बना है-**

(1) सखी (2) साक्षी
(3) संरक्षी (4) कोई कोई (2)

व्याख्या–यह संस्कृत के साक्षी शब्द से बना है। इसमें संत कवियों के अनुभव का ज्ञान मिलता है। **जैसे** - कबीर की साखियाँ।

☛ **आधुनिक राजस्थनी साहित्यकारों में किसकी कविताओं में 1956 के अकाल का मार्मिक वर्णन देखने को मिलता है-**

(1) सूर्यमल्ल मिश्रण (2) रामनाथ कविया
(3) शंकरदान सामोर (4) कवि ऊमरदान (4)

व्याख्या–उमरदान कवि द्वारा अकाल से दुखी जनता के मार्मिक वर्णन के साथ-साथ पाखण्डी साधुओं को बेनकाब करने का कार्य भी किया गया। नारी चेतना को जागृत करने में रामनाथ कविया की रचना द्रोपदी विनय ने अहम भूमिया निभाई।

☛ **निम्न में से वह कवि जिन्होंने आजादी की लड़ाई में अपनी कलम की मदद से हिस्सा नहीं लिया-**

(1) केसरीसिंह बारहठ (2) विजयसिंह पथिक

(3) जयनारायण व्यास (4) दयालदास (4)

व्याख्या–इनके अलावा हीरालाल शास्त्री गोकुल भाई भट्ट, माणिक्यलाल वर्मा, जनकवि गणेशीलाल आदि ने भी आजादी की लड़ाई में अपनी कलम को हथियार बनाकर हिस्सा लिया।

☛ **वे कवि जिन्होंने आजादी की लड़ाई में भी भाग लिया व आजादी के बाद मोहभंग को भी कविताओं में प्रखर रूप से प्रकट किया-**

(1) गणेशीलाल व्यास

(2) जयनारायण व्यास

(3) हीरालाल शास्त्री

(4) ऐवतदान चारण (1)

व्याख्या–रेवतदान चारण की रचनाओं ने सामन्ती शोषण के प्रति आमजन को जगाने का कार्य किया।

☛ **1960 में ''राधा'' काव्यकृति की रचना किसने की?**

(1) मेघराज मुकुल (2) सत्यप्रकाश जोशी

(3) कन्हैयालाल सेठिया (4) विजयदान देथा (2)

व्याख्या–सत्यप्रकाश जोशी ने तत्कालीन साहित्यकारों में अपनी मौलिक व गैर पारम्परिक सोच से अलग स्थान बनाया। इनकी रचना 'राधा' नायिका के माध्यम से श्रीकृष्ण से युद्ध टालने का संदेश देती है जो तत्कालीन रचनाओं से बिल्कुल भिन्न थी।

- कन्हैयालाल सेठिया की रचना धरती धोरा री को राजस्थान का आदर्श गीत भी कहा जा सकता है।
- मीझंर व लीलटांस भी सेठिया जी के काव्य संग्रह है।

☛ **राजस्थान की आधुनिक कविता का पहला दौर कब तक चला–**

(1) सातवें दशक के प्रारंभ तक

(2) सातवें दशक के मध्य तक

(3) सातवें दशक के अंत तक

(4) आठवें दशक के प्रारंभ तक (2)

☛ **निम्न में से असंगत युग्म को पहचानिये-**

(1) जुड़ाव – पारस अरोड़ा

(2) गांव – गोरधनसिंह शेखावत

(3) कठैई की व्हेगो है – तेजसिंह जोधा

(4) सोजती गेट – हरीश भदाणी (4)

व्याख्या–सोजती गेट व पगफेरो की रचना मणि मधुकर ने की।

- हरीश भदाणी ने बोलै सरणाओ व बाथां में भूगोल की रचना की।
- इसी समय कई साहित्यिक पत्रिकाएं भी प्रकाशित हुई जैसे - राजस्थली, ईसरलाट, राजस्थानी - एक हेलो, दीठ, चामल, अपरंच, हरावल, लाड़ेसर, आलमो, मरूवाणी, जलमभोम, जाणंकारी आदि।

☛ **निम्न में से कौनसी रचना सुमेलित है-**

(1) पागी, कावड़, मारग – चन्द्रप्रकाश देवल

(2) रिन्दरोही – अर्जुनदेव चारण

(3) उतरयौ है आभौ – मालचन्द तिवाड़ी

(4) उपरोक्त सभी सुमेलित है। (4)

☛ **'सपन प्रिया' व 'अंतराल' की रचना किसने की?**

(1) विजयदान देथा

(2) यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र

(3) नथमल जोशी

(4) इनमें से कोई नहीं (1)

व्याख्या–विजय दान देथा की प्रसिद्ध रचनाओं में ''बातां री फूलवारी'',''दुविधा'', ''उलझन'', 'अलेखूं हिटलर', 'चौधराईन की चतुराई' आदि शामिल है।

- **यादवेन्द्र शर्मा की प्रसिद्ध रचनाओं** में जमारो, समंद अर थार चादां सेठानी, जोग-संजोग, हू गोरी किण पीवरी, हजारो घोड़ों का सवार, मिट्टी का कलंक, जनानी ड्योढ़ी, खम्मा अन्नदाता आदि शामिल है।
- **नथमल जोशी की प्रमुख रचनाएं** - परण्योड़ी -कुंवारी, आभै पटकी, धोरा रो धोरी, एक बीननी दो बीन, सबड़का आदि।

☛ **निम्न में से कौन 'कहानीकार' नहीं है-**

(1) डॉ. नृसिंह राजपुरोहित

(2) अन्नाराम सुदामा

(3) रामेश्वर दयाल

(4) सभी कहानीकार है (4)

व्याख्या–इनके अलावा डॉ मनोहर शर्मा व सावंरदईया भी प्रसिद्ध कहानीकारों में शामिल है।